प्रातःक्लास ओमशांति 5.9.67

ओमशांति। मीठे2 रुहानी बच्चे सहज याद में बैठे हैं। कोई को डिफीकल्टी लगती है। बहुत मूंझते हैं। समझते हैं हम टाइट अथवा अशरीरी होकर बैठे हैं। बाप कहते हैं ऐसे कोई बात नहीं है। कैसे भी बैठो। बाप को सिर्फ याद करना है। इसमें मुश्किलात की कोई बात नहीं। वह हठयोग ऐसे टाइट होकर बैठते हैं। टांग–टांग पर चढ़ाते हैं। यहां तो बाबा कहते हैं आराम से बैठे रहो। बाप की याद और 84 के चक्र को याद करना है। यह है ही सहज याद। उठते–बैठते बुद्धि में याद रहे। जैसे देखो यह छोटा बच्चा बाप के बाजू में बैठा है। इनकी बुद्धि में मां–बाप ही याद होंगे। तुम भी बच्चे हो ना। बाप को याद करना तो बहुत सहज है। हम बाबा के बच्चे हैं। बाबा से ही वर्सा लेना है। शरीर निर्वाह अर्थ गृहस्थ व्यवहार में भी भल रहो। सिर्फ औरों की याद बुद्धि से निकाल दो। कोई हनुमान को ,कोई किसको ,कोई साधु आदि को याद करते थे। वह ही याद छोड़ देनी है। याद तो करते हैं ना। पूजा के लिए पुजारी को मंदिर आदि में जाना पड़ता है। इसमें कहीं जाने की दरकार नहीं है। कोई भी मिले उनको बोलो शिवबाबा का कहना है मुझ एक बाप को याद करो। शिवबाबा है निराकार। जरूर वह साकार में ही आय कर कहते हैं मामेकम् याद करो। मैं पतित–पावन हूं। यह तो राइट अक्षर है ना। बाबा कहते हैं मुझे याद करो। तुम सब पतित हो। यह पतित तमोप्रधान दुनियां है। इसलिए बाप कहते हैं कोई भी देहधारी को याद न करो। मामेकम् याद करो। यह तो अच्छी बात है ना। कोई गुरू आदि की महिमा नहीं करते हैं। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। यह है योगबल अथवा योग अग्नि। बेहद के बाप तो सच्च कहते हैं ना। गीता का भगवान वह निराकार ही है। कृष्ण की बात नहीं। भगवान सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। और कोई उपाय नहीं। पावन होकर जाने से उंच पद पावेंगे। नहीं तो कम पद हो जावेगा। हम तुमको बाप का संदेश देते हैं। मैं संदेशी हूं। इस समझानी में कोई तकलीफ नहीं। मातायें ,अहिल्यायें,कुब्जायें भी उंच पद पाय सकती हैं। चाहे यहां रहने वाले हों,चाहे घर–गृहस्थ में रहने वाले हों। ऐसे नहीं कि यहां रहने वाले जास्ती याद करते हैं। बाबा कहते हैं बाहर में रहने वाले भी बहुत याद कर सकते हैं। बहुत सर्विस कर सकते हैं। यहां भी बाप से रिफ्रेश होकर फिर जाते हैं तो अंदर में कितनी खुशी रहनी चाहिए। इस छी2 दुनियां में तो बाकी थोड़े रोज हैं। फिर चलेंगे अपने सुखधाम। कृष्णपुरी। कृष्ण के मंदिर को भी सुखधाम कहते हैं। तो बच्चों को अपार खुशी होनी चाहिए। जबकि तुम बेहद के बाप के बने हो। तुमको ही स्वर्ग का मालिक बनाया था। तुम भी कहते हो हम बाबा हम आपसे 5000वर्ष पहले भी मिले थे। अनेक बार मिले हैं। फिर भी मिलेंगे। अब बाप को याद करने से माया पर जीत पानी है। अब इस दुःखधाम में तो रहना न है। तुम पढ़ते ही हो सुखधाम में जाने लिए। सबको हिसाब–किताब चुक्तू कर वापस जाना है। मैं आया हूं हैविन नई दुनियां स्थापन करने। बाकी सब आत्माएं चली जावेंगी मुक्तिधाम। बाप कहतें हैं मैं कालों का काल हूं ना। सबका शरीर छुड़वाय और आत्माओं को ले जाउंगा। सब कहते भी हम जल्दी जावें। यहां ता रहने का नहीं है। यह तो पुरानी दुनिया,पुराना शरीर है। अब बाप कहते मैं सबको ले जाउंगा। छोड़ेगा किसको भी नहीं। तुम सबने बुलाया ही है हे पतित–पावन आओ। भल याद करते रहते हैं ;परंतु अर्थ कुछ भी नहीं समझते। पतित–पावन .....की धुन लगाते हैं। फिर कहते रघुपति राजा राम। अब शिवबाबा तो राजा बनते ही नहीं। राजाई करते नहीं। उनको राजा–राम करना रांग हो गया। माला जब सुमिरते हैं तो राम2 कहते हैं। उसमें भगवान की याद आती है। भगवान तो है ही शिव। मनुष्यों ने नाम बहुत रख दिये हैं। कृष्ण को भी श्याम–सुंदर,वैकुंठनाथ,मक्खनचोर आदि2 बहुत नाम देते हैं ;परंतु है कुछ भी नहीं। तुम अभी कृष्ण को मक्खन चोर कहेंगे?कभी नहीं। कृष्ण ने इनको भगाया?राम की सीता चुराई गई। यह तो ग्लानी करते हैं। बाप समझाते हैं यह कब हुआ नहीं। तुम कितने

अपने धर्म की ग्लानी करते हो। क्राइस्ट के लिए कब कहेंगे कच्छ–मच्छ अवतार लिया अथवा वह कण2 में है। शिवबाबा के लिए तुम ऐसे क्यों कहते हो?कितनी तुच्छ बुद्धि की बातें हैं। यह तुम अभी समझते हो। मनुष्य कहेंगे शास्त्र सब झूठी है क्या?अरे,यह बातें हो कैसे सकतीं?कितनी ग्लानी की है। यदा यदा.....यह भगवानुवाच है ना। भगवान तो एक ही निराकार है। कोई देहधारी को भगवान नहीं कहा जा सकता। ब्रह्मा ,विष्णु,शंकर को भी नहीं कह सकते। तो फिर पतित मनुष्यों को भगवान कैसे कह सकते?बाप की माला फिर भी तो 108 की गाई जाती है। यह तो 16108 जगदगुरू अपने को कह देते। पाग और ही बढ़ाय दी है। आजकल माइयां भी निकली हैं श्री2108जगदगुरू कहलाने वाली। बाप कहते यह है ही वैश्यालय। यह (लक्ष्मी–नारायण) तो शिवालय के मालिक थे। शिवबाबा ने स्वर्ग स्थापन किया है। उनके यह मालिक हैं। जरूर इनने पहले इन्होंने इतना पुरुषार्थ किया होगा। इसको कहा जाता है कलियुग अंत। सतयुग आदि का संगमयुग। यह है कल्प का संगमयुग। मनुष्यों ने फिर युगे2 कह दिया है। अवतार नाम भी भूल फिर ठिक्कर–भित्तर में कह देते। भक्ति कितनी व्यभिचारी हो गई है। यह भी है ड्रामा। जो पास्ट हो जाती है। कोई से झगड़ा आदि हुआ। पास हुआ। उनका मनन–चिंतन नहीं करना चाहिए। अच्छा,कोई ने कम–जास्ती बोला। तुम उनको भूल जाओ। कल्प पहले भी ऐसे बोला था। याद न रहने से फिर बिगड़ते रहेंगे। वह बात कब बोलो भी नही। तुम बच्चों को सर्विस तो करनी है ना। सर्विस में कब विघ्न न पड़ना चाहिए। सर्विस में कमजोरी न खानी चाहिए। शिवबाबा की सर्विस है ना। इनमें जरा भी कोताही नहीं करनी चाहिए। नहीं तो बहुत अपना पद भ्रष्ट कर देंगे। बाप की मददगार बने हो तो पुरी मदद देनी है। बाप की सर्विस में जरा भी धोखा न देना है। पैगाम सबको पहुंचाना है। बाप कहते रहते हैं म्यूजियम खोला। इनका नाम ऐसा रखो जो मनुष्य देखे अंदर घुस जाये और आकर समझे ;क्योंकि यह नई चीज है ना। मनुष्य नई चीज देख अंदर घुसते हैं। आजकल बाहर से आये हैं भारत का प्राचीन योग सीखने। अब प्राचीन अर्थात् पुराना ते पुराना। वह तो भगवान का ही सिखाया हुआ है। जिसको 5000वर्ष हुए। सतयुग–त्रेता में योग होता नहीं। जिसने सिखाया वह तो चला गया। फिर जब 5000वर्ष बाद आवे तब ही आय राजयोग सिखावे। प्राचीन अर्थात् 5000वर्ष पहले भगवान ने सुनाया था। वह ही भगवान फिर संगम पर आय राजयोग सिखावेंगे। जिससे पावन बन सकते हैं। इस समय तो तत्व भी तमोप्रधान हैं। पाानी भी कितना नुकसान कर देते हैं। उपद्रव होती रहती है पुरानी दुनियां में। सतयुग में उपद्रव की बात नहीं। वहां तो प्रकृति दासी बन जाती है। यहां प्रकृति दुश्मन है। दुःख देते हैं। इन लक्ष्मी–नारायण के राज्य में दुःख की बात नही थी। सतयुग था। अभी फिर वह स्थापन हो रही है। बाप प्राचीन राजयोग सिखाय रहे हैं। फिर 5000वर्ष बाद सिखावेंगे। जिसका पार्ट है वह ही बजावेंगे। बेहद का बाप भी पार्ट बजाय रहे हैं। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश कर स्थापना कर फिर मैं चला जाता हूं। हायहायकार के बाद फिर जयजयकार हो जाती है। पुरानी दुनियां खतम हो जावेगी। इन (लक्ष्मी–नारायण) का राज्य था तो पुरानी दुनियां नहीं थी। 5000वर्ष की बात है। लाखों वर्ष की बात तो हो नहीं सकती। तो बाप कहते हैं (और) सभी बातों को छोड़ इस सर्विस में लग जाओ अपना कल्याण करने। रूठ कर सर्विस में धोखा नहीं देना चाहिए। यह है ईश्वरीय सर्विस। इनके साथ धर्मराज भी है। माया के तूफान तो बहुत आवेंगे ;परंतु बाप की ईश्वरीय सर्विस में धोखा न देना है। बाप सर्विस (अर्थ) डायरैक्शन तो देते रहते हैं। मित्र–सम्बंधी आदि जो भी आवें सबके सच्चे मित्र तुम हो। तुम ब्रह्माकुमारियां सारी दुनियां के मित्र हो ;क्योंकि तुम बाप के मददगार हो। मित्रों में कोई शत्रुता न होनी चाहिए। कोई भी बात निकले बोलो शिवबाबा को याद करो। कोई हंगामा करने की दरकार नहीं। बाप की श्रीमत पर लग जाना है। नहीं तो अपना नुकसान करेंगे

ट्रेन (में) जब तुम आते हो वहां तो सब फ्री है। सर्विस का बहुत अच्छा चांस है। बैज तो बहुत अच्छी है। हरेक के पास लगा रहे। कोई भी पूछे यह क्या है। तुम कौन हो। बोलो फायर ब्रिगेड होती है ना आग को बुझाने लिए। तो इस समय में सारी सृष्टि में काम अग्नि है। सब जले हुए हैं। अब बाप कहते हैं इन काम महाशत्रु पर जीत पहनो। बाप को याद करो,पवित्र बनो। दैवी गुण धारण करो तो बेड़ा पार है। यह बैज तो श्रीमत से ही बनी है ना। बहुत थोड़े बच्चे हैं जो बैज पर सर्विस करते हैं। सोनीपत पार्टी आई है। एक को भी बैज लगा हुआ नहीं है। बाबा मुरलियों में कितना समझाते रहते हैं। हरेक ब्राह्मणी के पास यह 100/150 पड़ी रहे। कोई भी मिले उनको इस पर समझाना चाहिए। यह है बाबा। इनको याद करना है। हम साकार की महिमा नहीं करते। सर्व सदगति दाता एक ही निराकार बाप है। उनको याद करना है। याद के बल से ही तुम्हारे पाप कट जावेंगे। फिर अंत मते सो गति हो जावेगी। दुःखधाम से छूट जावेंगे। कितनी बड़ी खुशखबरी है। कोई भी बैज मांगे दे दो। बोलो, तुम अगर गरीब हो तो फ्री दे सकते हैं। साहुकारों को तो देना ही चाहिए ;क्योंकि यह तो बहुत बनानी होती है। यह चीज ऐसी है जिससे तुम फकीरों से विश्व का मालिक बनावेंगे। बाप को याद करने से ही तुम पावन बन जावेंगे। शिवबाबा को याद करो। कोई पाप न करो। नहीं तो सौना बन जावेगा। समझानी तो मिलती ही रहती है। कोई भी धर्मवाला हो वास्तव में तुम आत्मा हो। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। अब विनाश सामने खड़ा है। यह दुनियां बदलनी है। शिवबाबा को याद करेंगे तो विष्णुपुरी में जावेंगे। बैज मांगे तो दे देना चाहिए। बोलों यह गंवाना नहीं। हम आपको करोड़ो/पदमों की चीज देते हैं। बाबा ने कितना समझाया है बैज पर सर्विस करनी है ;परंतु बैज लगाते ही नहीं। लज्जा आती है। ब्राह्मणियां.....हुआ नहीं है। यह तो हरेक का अपना2 पार्ट है। चैतन्य झाड़ है ना। झाड़ के पत्ते भी नम्बरवार निकलेंगे। इस झाड़ को कोई भी समझते नहीं हैं। इनका बीज उपर है। इसलिए इनको उल्टा वृक्ष कहा जाता है। रचता बाप है उपर में। अभी तुम जानते हो हमको जाना है अपने घर। जहां सब आत्माएं रहती हैं। अभी हमको पवित्र बनकर जाना है। तुम्हारे द्वारा योगबल से सारी विश्व पवित्र हो जाती है। तुम्हारे लिए तो पवित्र सृष्टि चाहिए। तुम पवित्र बनते हो तो दुनियां भी जरूर पवित्र बनानी है। सब पवित्र हो जाते हैं। तुम्हारे बुद्धि में है कि यह झाड़ कैसे वृद्धि को पाता है। बाप की भी बुद्धि में है। आत्मा में ही मन बुद्धि है ना। चैतन्य है। आत्मा ही ज्ञान को धारण कर सकती है। जनावर थोड़े ही धारण करेंगे। तो मीठे बच्चों को सारा राज बुद्धि में होना चाहिए। कैसे हम पुनर्जन्म लेते हैं। 84 का चक्र कैस पूरा होता है। तुम्हारा पूरा होता है तो सबका पूरा होता है। सब पावन बन जाते हैं। यह अनादि बना हुआ ड्रामा है। सो फिर कल्प बाद होगा। यह सब बातें समझने की हैं। हरेक आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। वह एक्टर्स तो करके 2/4 (घंटे) का पार्ट बजाते हैं। यह तो आत्मा का नैचुरल पार्ट मिला हुआ है। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। अतिइंद्रिय सुख अभी संगमयुग का ही गाया हुआ है। पूछताछ अभी होती है। जबकि बाप आते हैं। तुमको सुख मिलता है। 21जन्मों लिए हम सदा सुखी बनते हैं। खुशी की बातें हैं ना। जो अच्छी रीति समझते और समझाते हैं वह सर्विस पर लगे रहते हैं। बच्चियां तो जा(जो) सर्विस पर रहती हैं उनकी सम्भाल भी करनी है। कहां2 इन्सल्ट भी कर देते हैं। पूरी रीत सम्भालते न हैं तो चले आना है। कोई2 ब्राह्मणियों तो कोई काम की नहीं होतीं। कहते हैं बाबा इनमें तो फैशन बहुत है। हुकम चलाते रहती है। खुद ही क्रोधी है तो दूसरे में भी इसकी प्रवेशता हो जाती है। ताली दो हाथ की बजती है। वहां ऐसे नहीं होगा। यहां तुम बच्चों को शिक्षा मिलती है। कोई क्रोध करे तो प्यार से समझाओं यह भी एक भूल है। ...नुकसान कर देंगे। क्रोध कब न करना है।
(यह मुरली इतनी ही है)